SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations
E-ISSN 3108-1207
Vol.2,Issue 1,pp.108-112 , Jan June2026
Available online at : https://www.samglobaluniversity.ac.in/archives/

शोध–पत्र – ड्राफ्ट

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जनजातीय महिलाओं में सशक्तिकरण के स्तर का एक अध्ययन (बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी उत्पाद के विशेष संदर्भ में)

हरिकेश
पी एच. डी. शोधार्थी (समाजकार्य) सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, बिलखिरिया, रायसेन रोड, भोपाल
Corresponding author Email: hd11june@gmail.com
Received: 29/05/2026; **Accepted**: 17/06/2026; **Published**: 22/07/2026

संक्षेप (ABSTRACT):

स्वयं सहायता समूह एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से महिलाओं ने एक नई पहचान बनाई है। इसके साथ ही स्वयं सहायता समूह ने समूह की महिलाओं को अन्य महिलाओं के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने तथा एक दूसरे की मदद करते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विशेष योगदान दिया है। अब तक हुए विभिन्न प्रकार के अध्ययन इस बात को इंगित करते है कि समूह बनने के बाद तथा इसकी सदस्य बनने के बाद जनजातीय महिलाओं में सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है। महिलायें पहले समूह में केवल बचत की आवना से जुड़ती थी। लेकिन अब महिलायें समूह की बैठकों में बचत के अतिरिक्त बामीण महिलाओं की समस्याओं एवं उनके विकास के संबंध में भी चर्चा करने लगी है। स्वयं सहायता समूह महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं क्योंकि इन समूहों में कार्य करने से उनके स्वाभिमान, गौरव व आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। परिणामस्वरुप महिलाओं की क्षमताओं में बढ़ोतरी होती है। आज भारत दुनिया भर में महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के क्षेत्र में सर्वोपरि स्थान रखता है किन्तु हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियां महिला समूहों की गतिशीलता, व्यवहारता व साध्यता में अनेक चुनौतियों खड़ी होती है।

यह अध्ययन स्वयं सहायता समूह (SHG) हस्तक्षेपर्ा के माध्यम से बैतूल (मध्यप्रदेश) जिले की जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण के स्तर का विश्लेषण करता है, विशेषकर घोडाडोगरी क्षेत्र में निर्मित /व्यवसायीकृत उत्पादों के संदर्भ में। अध्ययन में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक ओर मनोवैज्ञानिक आयामों पर ध्यान दिया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य यह पहचानना है कि स्वयं सहायता समूह सदस्यता और उद्यमशीलता (घोड़ाडोंगरी के खाद्य / हस्तशिल्प उत्पाद) किस हद तक महिलाओं की ये, निर्णय क्षमता, आत्म–विश्वास और सामाजिक पहचान को बदलती है। अतः प्रस्तुत पेपर स्वयं सहायता समूह बनने के बाद जनजातीय महिलाओं के जीवन में आए परिवर्तनों को समझने का प्रयास करेगा जो कि साक्षात्कार तथा अवलोकन पर आधारित होगा।

कुंजी शब्द (KEY WORDS):

स्वयं सहायता समूह, जनजातीय महिला सशक्तिकरण, आजीविका मिशन, लखपति दीदी पहल", लाडली बहना योजना, एन आर एल एम, प्रदान, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, एन जी ओ।

प्रस्तावना (INTRODUCTION):

दुनिया में ऐसा कोई भी देश नहीं है जहाँ महिलाओं को हाशिए पर रखकर आर्थिक विकास संभव हुआ है। खासकर जनजातीय महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोडे बिना किसी समाज, राज्य व देश के आर्थिक, सामाजिक भारत राजनीतिक विकास की कल्पना भी

©2026, SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations

नहीं की जा सकती। भारत की कुल आबादी की आधी महिलाओं को सशक्त बनाए बिना सुदृढ भारत का सपना पूरा नहीं किया जा सकता, विशेषकर ग्रामीण जनजातीय महिलाओं को सशक्त किए बिना (शर्मा 2013) स्वयं सहायता समूह महिला जनजातीय महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है. जिसमें बांग्लादेश के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मुहम्मद यूनुस खान का प्रयास उल्लेखनीय रहा है। मध्य प्रदेश के बैतूल जिले का घोड़ाडोंगरी क्षेत्र अपनी समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ की महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूह केवल बचत का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक बदलाव का इंजन बन गए हैं। 'आजीविका मिशन' (NRLM) के तहत इन समूहों ने स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर महिलाओं को 'लखपति दीदी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

1. घोड़ाडोंगरी के प्रमुख उत्पाद और नवाचार– घोड़ाडोंगरी में महिला सशक्तिकरणा का सबसे बड़झा आधार वाहनों के स्थानीय उत्पाद है

1. कोदो–कुटकी (मोटा अनाज) यहाँ की महिलाएं कोदो–कुटकी का प्रसंस्करण (Processing) कर कुकीज, दलिया और चावल तैयार कर रही है।

2. महुआ मूल्य संवर्धनः पारंपरिक शराब के बजाय अब महिलाएं महुआ से लड्डू, बिस्कुट, चपाती, और आरटीएस (Ready to Serve) जूस बना रही हैं।

3. वनोपज संग्रहण चिरौंजी, हर्रा, तेंदूपता और बहेड़ा का वैज्ञानिक तरीके से संग्रहण और विक्रय ।

4. लघु वनोपज (MFP) औषधीय जड़ी–बूटियों, शहद, गाँद, लाख, और महुआ बना संग्रह और प्रसंस्करण।

5. कृषि आधारित उत्पादः मशरूम की खेती, अदरक उत्पादन, और सब्जियों की खेती।

6. पशुपालनः मुर्गी पालन, पॉल्ट्री ओर बकरी पालन।

7. हस्तशिल्प और मूल्य संवर्धनः खादय प्रसंस्करण, खिलौने बनाना, और वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन।

2. सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम-स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं के जीवन में तीन स्तरों पर सुधार किया है:

आयाम	प्रभाव
आर्थिक	साहूकारों पर निर्भरता खत्म हुईः स्वयं का बैंक खाता और ऋण की सुविधा।
सामाजिक	निर्णय लेने की प्रक्रिया में आगीदारी; बाल विवाह और अंधविश्वास के खिलाफ जागरुकता।
कौशल विकास	पैकेजिंग, मार्केटिंग और डिजिटल भुगतान (PhonePe/QR Code) का ज्ञान।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)- मोहम्मद यूनुस (2003) के अनुसार माइक्रोफाइनेंस और स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। नाबार्ड (2015) की रिपोर्ट के अनुसार SHGs के माध्यम से महिलाओं की बचत, ऋण सुविधा और स्वरोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

1. आर्थिक सशक्तिकरणः स्वयं सहायता समूह (SHG) ग्रामीण जनजातीय महिलाओं के लिए लघु बचत और ऋण सुविधा प्रदान कर स्वरोजगार के अवसर बना रहे हैं. जिससे उनकी निर्भरता कम हुई

है।

2.

निर्णय लेने की क्षमताः अध्ययनों के अनुसार, समूहों के माध्यम से काम करने से महिलाओं का

आत्म–सम्मान बढ़ा है और वे परिवार व सामुदायिक निर्णयों में अधिक सक्रिय हो गई है।

3. घोडाडोंगरी (बैतूल) संदर्भः स्थानीय स्तर पर कौशल प्रशिक्षण (जैसे, कृषि, हस्तशिल्प) के माध्यम से उत्पादकता को बढ़ाया जा रहा है। समूह द्वारा उत्पादित वस्तुओं को मंच प्रदान कर उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाया जा रहा है, विशेषकर द्वारा रेखांकित ग्रामीण विकास योजनाओं के अंतर्गत ।

4. सामाजिक सशक्तिकरणः यह रूढ़िवादी विचारधारा को कम कर, महिलाओं में साक्षरता, स्वास्थ्य और संवाद, करने की क्षमता में सुधार लाता है।

©2026, SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations

अध्ययन क्षेत्र (Study area) -प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी विकासखण्ड में कुल 56 ग्राम पंचायतें हैं। विकासखण्ड के 7 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है। घोड़ाडोंगरी विकासखण्ड में संचालित स्वयं सहायता समूह (SHG) का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)-इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण स्थिति में स्वयं सहायता समूह (SHG) की भूमिका का अध्ययन करना।

2. उत्पाद आधारित गतिविधियों (जैसे हस्तशिल्प, कृषि–आधारित उत्पाद, पशुपालन आदि) के माध्यम से आय वृद्धि का विश्लेषण करना।

3. स्वयं सहायता समूह (SHG) से जुड़ने के बाद महिलाओं के सामाजिक और निर्णयात्मक सशक्तिकरण की सामाजिक स्थिति में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना।

4. उत्पाद विपणन, प्रशिक्षण और वितीय सहायता से जुड़े प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करना।

5. स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से जनजातीय महिलाओं को आने वाली समस्याओं का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद जनजातीय महिलाओं की आय में वृद्धि होती है।

2. SHGs महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

3. उत्पाद आधारित गतिविधियां महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं

अनुसंधान प्रश्न (Research Questions)-

1. आर्थिक प्रभाव: स्वयं सहायता समूहों (SHGs) से जुड़ने के बाद घोड़ाडोंगरी की जनजातीय महिलाओं की आय और बचत के स्तर में कितना सुधार हुआ है?

2. कौशल विकास: इन समूहों ने जनजातीय महिलाओं को स्थानीय उत्पादों (जैसे लघु वनोपज, हस्तशिल्प आदि) के मूल्य संवर्धन (Value Addition) और मार्केटिंग के लिए किस हद तक सक्षम बनाया है? **3. सामाजिक निर्णय प्रक्रिया:**SHG की सदस्यता ने महिलाओं की अपने परिवार और समुदाय के भीतर निर्णय लेने की शक्ति को कैसे प्रभावित किया है?

4. चुनौतियां: घोड़ाडोंगरी के दुर्गम क्षेत्रों में जनजातीय महिलाओं को समूह संचालन, बैंक लिंकेज और उत्पाद बेचने में किन प्रमुख बाधाओं का सामना करना पड़ता है?

5. सरकारी योजनाओं की भूमिका: राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं (जैसे आजीविका मिशन) से घोड़ाडोंगरी में महिला सशक्तिकरण की गति को कितनी स्थिरता प्रदान की है? **6. परिवार और समुदाय में निर्णय लेने की क्षमता:** (जैसे– शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति) में महिलाओं की भागीदारी कैसे बढ़ी है?

अनुसंधान पद्धति (Methodology)-

1. अनुसंधान डिजाइन (Research Design):वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical): यह अध्ययन स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण (आय, निर्णय लेने की क्षमता, कौशल) की स्थिति का वर्णन और विश्लेषण करेगा। **2. नमूना चयन (Sampling Method) क्षेत्र:** बैतूल जिले का घोड़ाडोंगरी ब्लॉक (जनजातीय बहुल क्षेत्र)। उद्देश्यपूर्ण नमूना करण: घोड़ाडोंगरी से उन SHGs को चुनना जो कृषि, लघु वनोपज, या हस्तशिल्प जैसे विशिष्ट उत्पाद (Local Produce) पर काम कर रहे हैं।

नमूना आकार (Sample Size):लगभग 150-200 जनजातीय महिलाएं जो इन समूहों का हिस्सा है। **3. डेटा संग्रह के स्रोत (Sources of Data Collection):**प्राथमिक डेटा (Primary Data): संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire). आय, बचत, ऋण लेने की आदतों और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन को मापने के लिए। केंद्रित समूह चर्चा (Focus Group Discussion - FGD): स्थानीय चुनौतियों और सफलता की कहानियों को समझने के लिए। साक्षात्कार (Interviews) SHG के प्रमुख सदस्यों और सदस्यों के साथ आमने–सामने।

द्वितीयक डेटा (Secondary

©2026, SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations

Data): DAY-NRLM (आजीविका मिशन) रिपोर्टः बैतूल जिले की रिपोर्ट, बैंक रिकॉर्ड, और एनजीओ के दस्तावेज।

संभावित परिणाम (Expected / Mustrafive findings): 1. आर्थिक सशक्तिकरण (Economic Empowerment)- 1. आय में वृद्धिःSHGs से जुड़ने के बाद महिलाओं की मासिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा सकती है। घोड़ाडोंगरी जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्रों में महुआ, चिरौंजी या हस्तशिल्प जैसे स्थानीय उत्पादों के प्रसंस्करण से बिचौलियों की समाप्ति और बेहतर बाजार मूल्य मिलना मुख्य कारण होगा। **2. बचत और ऋण की सुलभताः** महिलाओं में नियमित बचत की आदत विकासित होना और साहूकारों के बजाय समूह के माध्यम से कम ब्याज पर ऋण मिलना, जिससे उनकी वित्तीय निर्भरता कम होती है।**3. उद्यमिता विकासः** स्थानीय उत्पादों के लिए सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना (जैसे जनजातीय कला या खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों), जिससे महिलाएं श्रमिक से उद्यमी की भूमिका में आती है। **2. सामाजिक संस्करण (Social Empowerment)**

1. निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि आर्थिक स्वतंत्रता के कारण पारिवारिक और सामुदायिक स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी और सम्मान में वृद्धि।

2. आत्मविश्वास और नेतृत्व समूहों के माध्यम से सार्वजनिक मंचों पर बोलने, बैंक और सरकारी कार्यालयों के साथ संवाद करने की क्षमता भी सुधार। घोड़ाडोंगरी में महिला नेतृत्व का उभरना एक प्रमुख परिणाम हो सकता है।

3. सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरुकताः शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और कुप्रथाओं (जैसे बाल विवाह या नशा) के खिलाफ संगठित आवाज उठाना।

3. कौशल एवं बाजार विकास (Skill and Market Development)-

1. कौशल उन्नयनः आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण (जैसे ग्रेडिंग, पैकेजिंग और मार्केटिंग) के माध्यम से स्थानीय "घोड़ाडोंगरी उत्पादों की गुणवत्ता और ब्रांडिंग में सुधार।

2. बाजार तक पहुंच– ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, सरकारी मेलों और जिला स्तरीय विक्रय केंद्रों (जैसे आजीविका मार्ट) के माध्यम से उत्पादों का बेहतर विपणन।

4. जीवन स्तर में सुधार (Improved Quality of Life) :- 1. स्वास्थ्य और शिक्षाः बढ़ी हुई आय का उपायोग बच्चों (विशेषकर बालिकाओं) की बेहतर शिक्षा और परिवार की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में किया जाना।

2. डिजिटल साक्षरताःबैंकिंग लेनदेन और ऑनलाइन मार्केटिंग के लिए डिजिटल उपकरणों के उपयोग में वृद्धि।

नीति सुझाव (Policy Recommendatins) -

1. मूल्य संवर्धन (Value Addition):स्थानीय जनजातीय उत्पादों (जैसे- कोदो-कुटकी, महुआ, शहद, हस्तशिल्प) के लिए प्रोसेसिंग यूनिट्स और पैकेजिंग सेंटर स्थापित किए जाएं, ताकि कच्चा माल बैचने के बजाय तैयार उत्पाद सो बेहतर आय हो सके।

2. तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण– महिलाओं को आधुनिक कृषि तकनीकों, गुणवता नियंत्रण और डिजिटल मार्केटिंग ई-कॉमर्स का प्रशिक्षण दिया जाए, जो उन्हें 'लखपति दीदी" जैसे पहलों से जोड़ सके।

3. बाजार लिंकेज (Market Linkage):ग्रामीण उत्पादों को शहरी और ऑनलाइन बाजारों तक पहुंचाने के लिए 'बैतूल हब जैसे ऑनलाइन प्लेटफार्म का विकास और स्थानीय हाट-बाजारों में स्थायी स्टॉल उपलब्ध कराए जाए।

4. वित्तीय साक्षरता और डिजिटल बैंकिंग– बैंक ऋण तक आसान पहुंच और डिजिटल लेनदेन (UPI) के लिए प्रशिक्षण, ताकि ऋण के जाल से मुक्ति मिले और आत्मनिर्भरता बढ़े।

5. सामाजिक सशक्तिकरण व नेतृत्व– समूहों में निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने के लिए नेतृत्व परिक्षण (Leadership Training) आयोजित करना, ताकि वे घरेलू हिंसा के खिलाफ और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में भूमिका निभा सकें।

निष्कर्ष (Conclusion)- 1. आर्थिक सशक्तिकरणः स्वयं सहायता समूह (SHG) के जरिए घोड़ाडोंगरी क्षेत्र की महिलाओं को स्थानीय लघु धान्य (कोदो, कुटकी) के

©2026, SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations

प्रसंस्करण और पैकेजिंग में रोजगार मिला है। सतपुडांचल फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी जैसी पहलों के माध्यम से. इन उत्पादों का सही मूल्य प्राप्त हो रहा है और टर्नओवर में वृद्धि दर्ज की गई है. जो आत्मनिर्भरता की और एक बड़ा कदम है।

2. सामुदायिक और व्यक्तिगत विकासः समूह की नियमित बैठकों से उनमें निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व के गुण और बैंक बाजार का ज्ञान विकसित हुआ है। यह उन्हें घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर समुदाय के विकास में भूमिका निभानी के लिए प्रेरित कर रहा है।

3. सामाजिक स्थिति में सुधारः इन समूहों से जुड़कर जनजातीय महिलाएं अधिक आत्मविश्वास महसूस कर रही है और उनके स्वास्थ्य, शिक्षा व सामाजिक प्रतिष्ठा में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

4. भविष्य की आवश्यकता– इन समूहों की सफलता को और अधिक मजबूत बनाने के लिए तकतीनी प्रशिक्षण, बाजार लिंकेज, और डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना आवश्यक है. ताकि उत्पाद की गुणवत्ता और विपणना (marketing) को और सुधारा जा सके।

5. घोड़ाडोंगरी का मॉडल– यह सिद्ध करता है कि यदि जनजातीय महिलाओं को सही प्रशिक्षण और बाजार उपलब्ध कराया जाए, तो वो न केवल पने परिवार की गरीबी दूर कर सकती है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती दे सकती हैं।

5. चुनौतियाँ–

सफलता के बावजूद कुछ बाधाएं अभी भी मौजूद हैं:

1. कच्चे माल के भंडारण की आधुनिक सुविधाओं का अभाव।

2. बड़े शहरों के रिटेल चेन तक सीधी पहुँच की कमी।

3. डिजिटल साक्षरता में अभी भी सुधार की आवश्यकता।

6. निष्कर्ष एवं सुझाव

घोड़ाडोंगरी का मॉडल यह सिद्ध करता है कि यदि जनजातीय महिलाओं को सही प्रशिक्षण और बाजार उपलब्ध कराया जाए, तो वे न केवल अपने परिवार की गरीबी दूर कर सकती हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती दे सकती हैं।

सुझावः सरकार को इन उत्पादों की ऑनलाइन मार्केटिंग (E-commerce) और 'जीआई टैगिंग' (GI Tagging) पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

शोध पत्र के लिए संदर्भ (References):

1. जिला पंचायत बैतूल आजीविका मिशन रिपोर्ट।

2. जनजातीय कार्य विभाग, मध्य प्रदेश शासन।

3. स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित सफलता की कहानियाँ।

©2026, SAMQUEST-Journal of Emerging Innovations